ISBN- 978-93-92425-96-7

मिला वह प्रशंसनीय रहा है, उनके प्रति मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। मराठा विद्या प्रसारक समाज, नासिक संस्था के सभी पदाधिकारी, संचालक, सलग्न महाविद्यालयों के प्राचार्य, प्राध्यापक एवं अन्य कर्मचारी आदि से प्रेरणा मिलती रही। अतः उन सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

अतः ज्ञात-अज्ञात सभी विद्वतजन, गुरुजन, स्नेही, हिंदी प्रेमी आदि के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। प्रस्तुत ग्रंथ से हिंदी जगत के छात्र एवं पाठक लाभान्वित होंगे, ऐसी अभिलाषा रखता हूं।

दिनांक : 01 जनवरी 2022
स्थल : नासिक (महाराष्ट्र)

डॉ. पोपट भावराव बिरारी
(सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग)

अनुक्रमणिका

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा और महत्त्व — 7
   - डॉ. पोपट भावराव बिरारी
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप एवं विशेषताएं — 12
   - डॉ. महावीर रामजी हाके
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता — 17
   - बसोरी लाल इनवाती
4. प्रयोजनमूलक हिंदी का संवैधानिक उपबंध — 22
   - डॉ सुरेश कुमार
5. प्रयोजनमूलक हिंदी की व्यावहारिक उपादेयता — 27
   - डॉ. लक्ष्मण तु. काळे
6. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध क्षेत्र — 33
   - डॉ. वि. सरोजिनी
7. प्रयोजनमूलक हिंदी में रोजगार की संभावनाएं — 39
   - प्रा. नटवर संपत तड़वी
8. राजभाषा हिंदी का प्रयोजनपरक अध्ययन — 43
   - डॉ. नवनीत कौर
9. वैज्ञानिक-तकनीकी क्षेत्र में हिंदी — 48
   - श्रीमती मंगला जटगोंडा
10. बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग और समस्याएं — 52
    - मधु मेहता साथी
11. पारिभाषिक शब्दावली : स्वरूप तथा निर्माण प्रक्रिया — 57
    - श्रीमती श्रुती मण्किकर
12. कार्यालयीन हिंदी के प्रमुख कार्य — 62
    - रोहिणी रामचंद्र सालवे
13. संक्षेपण लेखन — 67
    - लुनेश कुमार वर्मा
14. जनसंचार माध्यम : स्वरूप एवं वर्गीकरण — 72
    - डॉ श्रीकला यू.
15. सिनेमा की पटकथा का स्वरूप और लेखन प्रक्रिया — 78
    - डॉ. रघुनाथ नामदेव वाकळे

16. डाक्यूमेंट्री लेखन 83
– डॉ. उज्वला अशोक राणे
17. रिपोर्ताज लेखन 89
– डॉ. ललित चंद्र जोशी
18. पत्रकारिता का स्वरूप एवं महत्त्व 95
– डॉ. रेवा प्रसाद
19. कार्यालयीन हिंदी और अनुवाद 100
– डॉ. सरलता राम प्रकाश वर्मा
20. हिंदी भाषा : विभिन्न रोजगारों की उपलब्धि 106
– डॉ. शिंदे मालती धोंडोपन्त
21. अनुवाद : स्वरूप और क्षेत्र 109
– डॉ. यशवन्ती देवी
22. अनुवाद के प्रकार 115
– रजनीश कुमार
23. अनुवाद : प्रक्रिया और महत्त्व 122
– डॉ. झुनुबाला खुण्टिआ
24. अनुवाद पुनरीक्षण और मूल्यांकन 128
– डॉ. डॉली सिंह नागर
25. सृजन का सृजन है साहित्यानुवाद 133
– डॉ. अंगदकुमार सिंह
26. विश्व भाषाओं से अनूदित हिंदी साहित्य : दशा एवं दिशा 138
– प्रा. डॉ. वीरश्री वशिष्ठजी आर्य
27. हिंदी अनुवाद और रोजगार की संभावनाएँ 145
– डॉ. आलोक कुमार सिंह
28. हिंदी कंप्यूटिंग : विविध आयाम 151
– किरण अय्यर वी.

1

प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा और महत्त्व

– डॉ. पोपट भावराव बिरारी

प्रस्तावना :–

सामाजिक जीवन से संबद्ध विभिन्न प्रयोजनों के संप्रेषण हेतु भाषा का विकास हुआ। भाषा के तीन प्रमुख रूपों में जनभाषा, साहित्यिक भाषा और प्रयोजनमूलक भाषा का समावेश होता है। जनभाषा उसे कहते है जिसमें लोकवाणी अर्थात जनसाधारण की भाषा प्रस्फुटित होती है। यह आमतौर पर मौखिक होती है और उसमें विचारों की सहज अभिव्यक्ति होती है। साहित्यिक भाषा में भाषिक सौंदर्य को प्रदर्शित किया जाता है। प्रकार्य के स्वरूप की दृष्टि से साहित्यिक भाषा में अर्थ व्यंजनाश्रित तथा लाक्षणिक होता है तो प्रयोजनमूलक भाषा अभिधापरक एवं एकार्थी होती है। प्रयोजनमूलक भाषा का संबंध मानव जीवनयापन के विभिन्न क्षेत्रों, सूचनाओं, शासकीय कर्तव्यों, व्यापारिक दायित्वों तथा ज्ञान-विज्ञान से जुड़ा है।

आधुनिक काल की हिंदी भाषा प्रयोजन-मूलकता के कारण ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती जा रही है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में परस्पर व्यवहार का संबंध बढ़ने से प्रयोजनमूलक भाषा की जिम्मेदारी बढ़ती जा रही है। अतः प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा विविध सामाजिक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त है।

प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ :–

प्रयोजन शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रयोजन' विशेषण में 'मूलक' उपसर्ग लगाने से हुई है। प्रयोजन का अर्थ है ''किसी काम, चीज या बात का प्रयोग करने अर्थात उसे व्यवहार में लाने की क्रिया या भाव।''[1] अर्थात 'प्रयोजन' का तात्पर्य 'उद्देश्य' अथवा 'प्रयोजनीयता' से है। इसलिए प्रयोजन का संबंध भाषा में प्रयोजनीयता से जुड़ा है। 'मूलक' का अर्थ है ''जो किसी के मूल में हो।''[2] अर्थात 'मूलक' का तात्पर्य 'आधार' से है। प्रयोजनकमूलक भाषा का अर्थ हुआ 'विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा।' अतः प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य है कि, 'ऐसी विशिष्ट हिंदी जिसका विशिष्ट प्रयोजन अथवा उद्देश्य के लिए किया जाता है।'

प्रयोजनमूलक हिंदी का शब्द प्रयोग अंग्रेजी के 'फंक्शनल हिंदी' शब्द के पर्यायी रूप में प्रचलित है। शब्दार्थ की दृष्टि से देखा जाने पर प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ होगा ऐसी विशेष शैलीयुक्त हिंदी जिसका प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन के

करती है। वह मर्मस्पर्शिता और संवेदनशीलता के माध्यम से उत्पन्न होती है, जिसका कलात्मकता से गहरा संबंध होता है।

10. **सामयिकता** – रचना में सामयिकता होनी चाहिए। रिपोर्ताज किसी सामयिक घटना पर लिखा जाना चाहिए। सहसा घटित होने वाली महत्वपूर्ण घटना को पृष्ठ पर उतारा जाना चाहिए।
11. **परिवेश का अंकन** – घटना का वर्णन करने के लिए परिवेश का अंकन भी किया जाना आवश्यक है।
12. **उद्देश्यपरक** – रिपोर्ताज का उद्देश्य भी स्पष्ट होना चाहिए।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रिपोर्ताज लेखन पत्रकारिता के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। अब पाठक समय-समय की गतिविधियों से परिचित होना चाहते हैं। ऐसे में वह समाचार पत्र हो या फिर इलेक्ट्रानिक मीडिया और या फिर वेब मीडिया हो, इनमें रिपोर्ट्स को पढ़ने के लिए उत्सुकतावश देखते हैं। विगत वर्षों में हमने यह अनुभव किया है कि खेल, आपदा, सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर लिखे गए रिपोर्ताजों को पाठकों/दर्शकों ने पसंद किया। इसलिए कहा जा सकता है कि रिपोर्ताज विधा में अपार संभावनाएं बरकरार हैं।

संदर्भ सूची

1. मेहरा, रमेश, 'मीडिया और प्रसारण', तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, सं.2007, पृ.245
2. हरिमोहन, 'समाचार, फीचर-लेखन एवं सम्पादन कला', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.1992, पृ.108-109

18

पत्रकारिता का स्वरूप एवं महत्व

– डॉ. रेखा प्रसाद

प्रस्तावना :-

पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है जिसमें समाचारों की जानकारी एकत्रित करना, सम्पादित करना और सम्यक प्रस्तुतिकरण कर उपभोक्ताओं तक पहुँचाना आदि सम्मिलित है। पत्रकारिता का सीधा-संबंध समाचार पत्र पत्रिकाओं से है। समाचार ऐसी सम-सामायिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों पर आधारित है जिन्हें जानने की अधिक से अधिक लोगों में दिलचस्पी होती है और जिनका ज्यादा से ज्यादा लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। समाचार जिस पत्र में प्रकाशित होते है, वह समाचार पत्र कहलाते है और जिस प्रक्रिया के माध्यम से समाचार लिखित रूप तक पहुंचते है, उसे पत्रकारिता कहते है।

पत्रकारिता का स्वरूप :-

पत्रकारिता के स्वरूप को समझने से पहले समाचार के अर्थ को जानना आवश्यक होगा। समाचार के लिए अंग्रेजी में 'न्यूज' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो चार वर्णों के योग से बनता है। उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम। इस प्रकार न्यूज से तात्पर्य है– चारों दिशाओं से मिलने वाले समाचार। अंग्रेजी में पत्रकारिता के लिए 'जर्नलिज्म' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'जर्नलिज्म' शब्द की रचना 'जर्नल' से हुई है। 'जर्नल' का अर्थ है– दैनिक विवरण। हिंदी में 'जर्नल' के लिए 'पत्रिका' शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसे मैगजीन भी कहते हैं। सामाजिक दायित्व और जनहित से जुड़कर ही पत्रकारिता सार्थक बनती है। सामाजिक दायित्वों को व्यवस्था की दहलीज तक पहुंचाने और प्रशासन की जनहितकारी नीतियों तथा योजनाओं को समाज के सम्पूर्ण तबके तक ले जाने के दायित्व का निर्वाह ही सार्थक पत्रकारिता है। पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ भी कहा जाता है। जब पत्रकारिता अपने सामाजिक दायित्व के प्रति सार्थक भूमिका निभाती है तभी कोई लोकतंत्र सशक्त बनता है। सार्थक पत्रकारिता का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करे।

यदि पत्रकारिता के इतिहास पर नजर डालें तो भारत की स्वतंत्रता के पूर्व पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्त करना था। उस दौर में पत्रकारिता ने

पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने के साथ-साथ समाज के हर व्यक्ति को भी स्वाधीनता की प्राप्ति के लक्ष्य से जोड़े रखा। आज इन्टरनेट ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। कोई भी जानकारी आज पलक झपकते उपलब्ध करायी जा सकती है। आज मीडिया बहुत सशक्त, स्वतंत्र एवं प्रभावकारी हो गया है। विज्ञापनों के माध्यम से होने वाली कमाई से पत्रकारिता काफी हद तक व्यवसायिक हो गई है।

पत्रकारिता का महत्त्व :-

पत्रकारिता का महत्त्व हर क्षेत्र में है, फिर चाहे वह सामाजिक हो, राजनैतिक हो, सांस्कृतिक हो, शैक्षणिक हो या राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय, हर क्षेत्र से पत्रकारिता अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। 19वीं सदी में राष्ट्रीय और समाज सुधार आन्दोलनों में पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पत्रकारिता के महत्व को उजागर करते हुए गोपाल शेवडे ने लिखा है- पत्रकारिता के बिना हमारा सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता। समाचार पत्रों के बिना चारों ओर अफवाहों, षडयंत्रों औए अंधविश्वासों का वातावरण फैल जाता।

पत्रकारिता किसी भी देश की सामाजिक समीकरण को बदलने के साथ-साथ राजनीतिक सत्ता को भी पलटने और उस देश की दशा को बदलने की ताकत रखती है। पत्रकारिता विभिन्न राजनीतिक दलों की विचारधारा को जनता के सामने लाकर एक स्वस्थ जनमत का निर्माण करती है।इसी प्रकार पत्र-पत्रिकाएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षक हैं। समाचार पत्र जनता को विभिन्न धर्मों के त्योहारों इतिहास, सम्बंधित धार्मिक स्थानों, रीति रिवाजों से से भी परिचित करवाते हैं।

समाचार पत्र शिक्षा में आई कमजोरियों से भी अवगत करवाते हैं। विभिन्न शिक्षा शास्त्री अपने अनुभवों को पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जनता तक लाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र को और सशक्त करने हेतु अनेक पत्र-पत्रिकाएं जैसे- शिक्षक संसार, शिक्षण संवाद, शिक्षा सारथी आदि कार्य कर रहीं हैं। पत्रकारिता किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व शैक्षणिक उत्थान का आधार बनती है। पत्रकारिता न केवल नागरिकों को उनके अधिकारों से परिचित करवाती है बल्कि उनको उनके कर्तव्यों से अवगत करवाती है। इस प्रकार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से संसार देश के घटना क्रम को जान सकता है।

दो देशों के बीच के आपसी संबंधों को पत्रकारिता निर्धारित करती है। पत्रकारिता देश के राष्ट्रीय विकास के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय विकास में भी सार्थक भूमिका निभाती है।

पत्रकारिता में अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्त्व :-

आज मिडिया में अनुवाद आवश्यकता बन गया है। मिडिया सीमा विहीन है इसलिए मिडिया भौगोलिक सीमा को भूलकर अपने पाठकों की भाषा में समाचारों को प्रस्तुत करता है। विश्व और भारत में भाषा के अंतर को मध्यनजर रखते हुए समाचारों की प्रस्तुति केवल अनुवाद से ही संभव है। देश विदेश के समाचार एजेंसियों द्वारा उस देश की अपनी मूल भाषा में विश्व के अन्य देशों के समाचार पत्रों में प्रकाशित होने के लिए भेजे जाते हैं। विदेशी भाषाओं में प्राप्त इन समाचारों को अनुदित करके प्रत्येक देश के समाचार पत्र इन्हे अपनी भाषा या भाषाओं में प्रकाशित करते हैं। उदाहरण स्वरूप रूस, चीन, जापान, फ्रांस, अमेरिका और इग्लैंड के समस्त समाचार न तो अंग्रेजी भाषा में प्राप्त होते हैं, और न ही हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में। यह समाचार देश की अपनी मूल भाषाओं में लिखे होते हैं, इन सभी समाचार पत्रों को अनुदित करके देश विशेष की भाषा में वहा के समाचार पत्र प्रकाशित करते हैं, इसलिए पत्रकारिता और अनुवाद का अंतरसंबंध बहुत घनिष्ठ है।

विश्व और भारत की भाषाओं में विविधिता होने के कारण पत्रकारिता में समाचार के सत्य को उजागर करने के लिए अनुवाद का सहारा लेना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। खासकर हिंदी पत्रकारिता के सन्दर्भ में, सभी हिंदी में प्रकाशित होनेवाले अखबारों को अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में सही ढंग से अंकन करने हेतु अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद की सहायता लेनी ही होती है, अर्थात हिंदी इलाकों के ऐसे बहुत से समाचार होते हैं जिनका हिंदी से अंग्रेजी में प्रतिदिन अनुवाद किया जाता है। यदि हिंदी एजेंसियां अंग्रेजी में अनुवाद करती हैं तो अंग्रेजी एजेंसियां भी हिंदी इलाकों के समाचारों का हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करती हैं। इसके लिए विभिन्न भाषाओं का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक होता है चाहे वह हिंदी भाषा का हो, क्षेत्रीय भाषा का हो, या प्रांतीय भाषा का हो या अंग्रेजी भाषा का कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि मूलभाषा के साथ ही अनुदित भाषा के उत्कृष्ट ज्ञान का होना भी अनिवार्य है। डॉ. जगदीश शर्मा ने प्राचीन काल से लेकर आज तक के समय के अनुवाद की भारतीय परंपरा को विस्तार से प्रस्तुत करते हुए बताया है कि भारत जैसे देश में हमेशा से अनुवाद की परम्परा विद्यमान रही है जिस कारणवश भारतीय कई भाषाओं के जानकार हैं। इनका मानना था कि भारतीय परम्परा में हम शब्दों की चेतना का अनुवाद करते हैं। हर देश में समय-समय पर कला अनुरूप अनुवाद होते आये है । खासकर धर्मप्रसार के साहित्य के संदर्भ में अनुवाद की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। यह कहना उचित होगा कि अनुवाद एक ऐसा माध्यम

भी अपरिचित भाषाओं के संसार को एक दूसरे के समीप लाता है और एक नई पहचान की सृष्टि करता है।

किसी भी पत्रकार के लिए अनुवाद कार्य अन्य साहित्यिक या तकनीकी अनुवाद के समान भारी या कठिन नहीं होता। स्वाभाविक तौर पर ये कहना ठीक होगा कि पत्रकारों को समाचारों से सम्बंधित सामग्री का ही अनुवाद करने की आवश्यकता पड़ती है। आजकल प्रमुख हिंदी अखबारों में इनफार्मेशन टेक्नोलाजी, नेट और विदेशों से जुड़ी मनोरंजक और ज्ञानवर्धक सामग्री देखने को मिलती है। अनुवाद में निपुण पत्रकारों को इस काम में बहुत सुविधा होती है कि तत्काल वह अंग्रेजी में उपलब्ध किसी भी सामग्री का अनुवाद कर सकता है। इसके जरिये वह अखबार में अपना महत्व और उपयोगिता बढ़ा सकता है। अनुवाद में दक्षता से न केवल वह अनुवाद की कला में पारंगत हो सकता है बल्कि इन्टरनेट, पत्र पत्रिकाओं व पुस्तकों में उपलब्ध सामग्री के माध्यम से अपने ज्ञान और समझ को भी विकसित कर सकता है ।

उपसंहार :-

इस प्रकार यह कहना अपवाद नहीं है कि पत्रकारिता में अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है। समाचार एजेंसियों द्वारा हिंदी में पर्याप्त समाचार उपलब्ध करने के बाद भी अच्छे अनुवादों के जरिये कोई भी अखबार अपना स्तर और छवि दूसरों से बेहतर बना सकता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवादक की भूमिका अहम होती है और अनुवाद की पूरी प्रक्रिया में उसे अलग-अलग भूमिका निभानी होती है, मूलपाठ का विश्लेषण करते हुए वह पाठक की भूमिका में होता है। अंतरण करते हुए द्विभाषिक विद्वान के रूप में और अनुदित पाठ प्रस्तुत करते हुए लेखक की भूमिका में। पत्रकार अनुवाद की विषयवस्तु के आधार पर साहित्यानुवाद, कार्यालयी अनुवाद, विधिक अनुवाद, आशु अनुवाद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद आदि कर सकता है और प्रक्रिया के आधार पर वह शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद एवं यांत्रिक अनुवाद कर सकता है। एक पत्रकार के लिए इन सभी प्रकारों की सामान्य जानकारी रखना अनिवार्य है क्योंकि इनकी मूल विषयवस्तु अक्सर समाचार का आधार होती है। पत्रकारिता में हर प्रकार के अनुवाद का आवश्यकतानुरूप प्रयोग होता है ।

पत्रकारिता समाज की गतिविधियों का आईना है और इसकी दृष्टि सूक्ष्म होती है यह शासन और जनता के बीच सेतु का काम करते हुए कुशल चिकित्सक की भांति समसामयिक परिस्थितियों एवं घटनाक्रम की नाड़ी को थाम कर उसके चलने की गति का अंदाज लगाकर स्वास्थ्य को सुधारने का काम करते हुए जागरूकता

पैदा करने के साथ-साथ प्रेरणा प्रदान करने में सहायक है।

संदर्भ सूची

1. समाचार पत्र एवं पत्रकारिता - शुक्ला सच्चिदानंद
2. पत्रकारिता में अनुवाद - जितेन्द्र गुप्त, प्रियदर्शन, अरुण प्रकाश